

५. ईमानदारी की प्रतिमूर्ति

- सुनील शास्त्री



जन्म : १९५०

परिचय : सुनील शास्त्री भारत के द्वितीय प्रधानमंत्री लाल बहादुर शास्त्री के पुत्र हैं। आप एक राजनेता के अलावा कवि और लेखक भी हैं। आपको कविता, संगीत और सामाजिक कार्यों में विशेष लगाव है। सामाजिक, आर्थिक बदलाव पर अपने विचारों को आप पत्र-पत्रिकाओं में व्यक्त करते रहते हैं।

प्रमुख कृतियाँ : 'लाल बहादुर शास्त्री : मेरे बाबू जी'। इस पुस्तक का अंग्रेजी अनुवाद भी हुआ है।



प्रस्तुत संस्मरण में लेखक ने स्व. लालबहादुर शास्त्री जी की ईमानदारी, सादगी, सरलता, सच्चाई, परदुःखकातरता आदि गुणों को बड़े अच्छे ढंग से उजागर किया है।

हमने अपने जीवन में बाबू जी के रहते अभाव नहीं देखा। उनके न रहने के बाद जो कुछ मुझपर बीता, वह एक दूसरी तरह का अभाव था कि मुझे बैंक की नौकरी करनी पड़ी। लेकिन उससे पूर्व बाबू जी के रहते मैं जब जन्मा था तब वे उत्तर प्रदेश में पुलिस मंत्री थे। उस समय गृहमंत्री को पुलिस मंत्री कहा जाता था। इसलिए मैं हमेशा कल्पना किया करता था कि हमारे पास ये छोटी गाड़ी नहीं, बड़ी आलीशान गाड़ी होनी चाहिए। बाबू जी प्रधानमंत्री हुए तो वहाँ जो गाड़ी थी वह थी, इंपाला शेवरलेट। उसे देख-देख बड़ा जी करता कि मौका मिले और उसे चलाऊँ। प्रधानमंत्री का लड़का था। कोई मामूली बात नहीं थी। सोचते-विचारते, कल्पना की उड़ान भरते एक दिन मौका मिल गया। धीरे-धीरे हिम्मत भी खुल गई थी ऑर्डर देने की। हमने बाबू जी के निजी सचिव से कहा-“सहाय साहब, जरा ड्राइवर से कहिए, इंपाला लेकर रेजिडेंस की तरफ आ जाएँ।”

दो मिनट में गाड़ी आकर दरवाजे पर लग गई। अनिल भैया ने कहा-“मैं तो इसे चलाऊँगा नहीं। तुम्हीं चलाओ।”

मैं आगे बढ़ा। ड्राइवर से चाभी माँगी। बोला-“तुम बैठो, आराम करो, हम लोग वापस आते हैं अभी।”

गाड़ी ले हम चल पड़े। क्या शान की सवारी थी। याद कर बदन में झुरझुरी आने लगी है। जिसके यहाँ खाना था, वहाँ पहुँचा। बातचीत में समय का ध्यान नहीं रहा। देर हो गई।

याद आया बाबू जी आ गए होंगे।

वापस घर आ फाटक से पहले ही गाड़ी रोक दी। उतरकर गेट तक आया। संतरी को हिदायत दी। यह सैलूट-वैलूट नहीं, बस धीरे से गेट खोल दो। वह आवाज करे तो उसे बंद मत करो, खुला छोड़ दो।

बाबू जी का डर। वह खट-पट सैलूट मारेगा तो आवाज होगी और फिर गेट की आवाज से बाबू जी को हम लोगों के लौटने का अंदाजा हो जाएगा। वे बेकार में पूछताछ करेंगे। अभी बात ताजा है। सुबह तक बात में पानी पड़ चुका होगा। संतरी से जैसा कहा गया, उसने किया। दबे पैर पीछे किचन के दरवाजे से अंदर घुसा। जाते ही अम्मा मिलीं।

पूछा - “बाबू जी आ गए ? कुछ पूछा तो नहीं ?”

बोली - “हाँ, आ गए। पूछा था। मैंने बता दिया।”

आगे कुछ कहने की हिम्मत नहीं पड़ी, यह जानने-सुनने की कि बाबू जी ने क्या कहा फिर हिदायत दी-सुबह किसी को कमरे में मत भेजिएगा।

रात देर हो गई । सुबह देर तक सोना होगा ।

सुबह साढ़े पाँच-पौने छह बजे किसी ने दरवाजा खटखटाया । नींद टूटी । मैंने बड़ी तेज आवाज में कहा- “देर रात को आया हूँ, सोना चाहता हूँ, सोने दो ।”

यह सोचकर कि कोई नौकर चाय लेकर आया होगा जगाने ।

लेकिन दरवाजे पर दस्तक फिर पड़ी । झुँझलाता जोर से बिगड़ने के मूड में दरवाजे की तरफ बढ़ा बढ़ाबड़ाता हुआ । दरवाजा खोला । पाया, बाबू जी खड़े हैं । हमें कुछ न सूझा । माफी माँगी । बेध्यानी में बात कह गया हूँ । वे बोले- “कोई बात नहीं, आओ-आओ । हम लोग साथ-साथ चाय पीते हैं ।”

हमने कहा- “ठीक है !”

बस जल्दी-जल्दी हाथ-मुँह धो चाय के लिए टेबल पर जा पहुँचा । लगा, उन्हें सारी रामकहानी मालूम है पर उन्होंने कोई तर्क नहीं किया । न कुछ जाहिर होने दिया ।

कुछ देर बाद चाय पीते-पीते बोले- “अम्मा ने कहा, तुम लोग आ गए हो पर तुम कहते हो रात बड़ी देर से आए। कहाँ चले गए थे ?”

जवाब दिया- “हाँ, बाबू जी ! एक जगह खाने पर चले गए थे ।”

उन्होंने आगे प्रश्न किया- “लेकिन खाने पर गए तो कैसे ? जब मैं आया तो फिएट गाड़ी गेट पर खड़ी थी । गए कैसे ?”

कहना पड़ा- “हम इंपाला शेवरलेट लेकर गए थे ।”

बोले- “ओह हो, तो आप लोगों को बड़ी गाड़ी चलाने का शौक है ।”

बाबू जी खुद इंपाला का प्रयोग न के बराबर करते थे और वह किसी ‘स्टेट गेस्ट’ के आने पर ही निकलती थी । उनकी बात सुन मैंने अनिल भैया की तरफ देख आँख से इशारा किया । मैं समझ गया था कि यह इशारा इजाजत का है । अब हम उसका आए दिन प्रयोग कर सकेंगे ।

चाय खत्म कर उन्होंने कहा- “सुनील, जरा ड्राइवर को बुला दीजिए ।”

मैं ड्राइवर को बुला लाया । उससे उन्होंने पूछा- “तुम लॉग बुक रखते हो न ?”

उसने ‘हाँ’ में उत्तर दिया । उन्होंने आगे कहा- “एंट्री करते हो ?”

“कल कितनी गाड़ी इन लोगों ने चलाई ?”

वह बोला- “चौदह किलोमीटर ।”

उन्होंने हिदायत दी- “उसमें लिख दो, चौदह किलोमीटर निजी उपयोग ।”

तब भी उनकी बात हमारी समझ में नहीं आई फिर उन्होंने अम्मा को



आज के उपभोक्तावादी युग में पनप रही दिखावे की संस्कृति पर अपने विचार लिखिए ।

बुलाने के लिए कहा। अम्मा जी के आने पर बोले- “सहाय साहब से कहना, साठ पैसे प्रति किलोमीटर के हिसाब से पैसे जमा करवा दें।”

इतना जो उनका कहना था कि हम और अनिल भैया वहाँ रुक नहीं सके। जो रुलाई छूटी तो वह कमरे में भागकर पहुँचने के बाद भी काफी देर तक बंद नहीं हुई। दोनों ही जन देर तक फूट-फूटकर रोते रहे।

आपसे यह बात शान के तहत नहीं कर रहा पर इसलिए कि ये बातें अब हमारे लिए आदर्श बन गई हैं। सक्रिय राजनीति में आने पर, सरकारी पद पाने के बाद क्या उसका दुरुपयोग करने की हिम्मत मुझमें हो सकती है? आप ही सोचें, मेरे बच्चे कहते हैं कि पापा, आप हमें साइकिल से भेजते हैं। पानी बरसने पर रिक्षा से स्कूल भेजते हैं पर कितने ही दूसरे लोगों के लड़के सरकारी गाड़ी से आते हैं। वे छोटे हैं उन्हें कलेजा चीरकर नहीं बता सकता। समझाने की कोशिश करता हूँ। जानता हूँ, मेरा यह समझाना कितना कठिन है फिर भी समय होने पर कभी-कभी अपनी गाड़ी से छोड़ देता हूँ। अपना सरकारी ओहदा छोड़कर आया हूँ और आपके साथ यह सब फिर जिन्न कर तनिक ताजा और नया महसूस करना चाहता हूँ। कोशिश करता हूँ, नींव को पुनः सँजोना-सँवारना कि मेरे मन का महल आज के इस तूफानी झंझावत में खड़ा रह सके।

याद आते हैं बचपन के वे हसीन दिन, वे पल, जो मैंने बाबू जी के साथ बिताए। वे अपना व्यक्तिगत काम मुझे सौंप देते थे और मैं कैसा गर्व अनुभव करता था। एक होड़ थी, जो हम भाइयों में लगी रहती थी। किसे कितना काम दिया जाता है और कौन उसे कितनी सफाई से करता है।

एक दिन बोले- “सुनील, मेरी अलमारी काफी बेतरतीब हो रही है, तुम उसे ठीक कर दो और कमरा भी ठीक कर देना।”

मैंने स्कूल से लौटकर वह सब कर डाला। दूसरे दिन मैं स्कूल जाने के लिए तैयार हो रहा था कि बाबू जी ने मुझे बुलाया। पूछा- “तुमने सब कुछ बहुत ठीक कर दिया, मैं बहुत खुश हूँ पर वे मेरे कुरते कहाँ हैं?”

मैं बोला- “वे कुरते भला! कोई यहाँ से फट रहा था, कोई वहाँ से। वे सब मैंने अम्मा को दे दिए हैं।”

उन्होंने पूछा- यह कौन-सा महीना चल रहा है?

मैंने जवाब दिया- अक्टूबर का अंतिम सप्ताह।

उन्होंने आगे जोड़ा- “अब नवंबर आएगा। जाड़े के दिन होंगे, तब ये सब काम आएँगे। ऊपर से कोट पहन लूँगा न!”

मैं देखता रह गया। क्या कह रहे हैं बाबू जी? वे कहते जा रहे थे- “ये सब खादी के कपड़े हैं। बड़ी मेहनत से बनाए हैं बीनने वालों ने। इसका एक-एक सूत काम आना चाहिए।”

यही नहीं, मुझे याद है, मैंने बाबू जी के कपड़ों की तरफ ध्यान देना शुरू किया था। क्या पहनते हैं, किस किफायत से रहते हैं। मैंने देखा था,



पुलिस द्वारा नागरी सुरक्षा के लिए किए जाने वाले कार्यों की जानकारी पढ़िए एवं उनकी सूची बनाइए।

एक बार उन्होंने अम्मा को फटा हुआ कुरता देते हुए कहा था- 'इनके रूमाल बना दो ।'

बाबू जी का एक तरीका था, जो अपने आप आकर्षित करता था । वे अगर सीधे से कहते-सुनील, तुम्हें खादी से प्यार करना चाहिए, तो शायद वह बात कभी भी मेरे मन में घर नहीं करती पर बात कहने के साथ-साथ उनके अपने व्यक्तित्व का आकर्षण था, जो अपने में सामने वाले को बाँध लेता था । वह स्वतः उनपर अपना सब कुछ निछावर करने पर उतारू हो जाता था ।

अम्मा बताती हैं- हमारी शादी में चढ़ावे के नाम पर सिर्फ पाँच ग्राम सोने के गहने आए थे, लेकिन जब हम विदा होकर रामनगर आए तो वहाँ उन्हें मुँह दिखाई में गहने मिले । सभी नाते-रिश्तेवालों ने कुछ-न-कुछ दिया था । जिन दिनों हम लोग बहादुरगंज के मकान में आए, उन्हीं दिनों तुम्हारे बाबू जी के चाचा जी को कोई घाटा लगा था । किसी तरह से बाकी का रुपया देने की जिम्मेदारी हमपर आ पड़ी-बात क्या थी, उसकी ठीक से जानकारी लेने की जरूरत हमने नहीं सोची और न ही इसके बारे में कभी कुछ पूछताछ की ।

एक दिन तुम्हारे बाबू जी ने दुनिया की मुसीबतों और मनुष्य की मजबूरियों को समझाते हुए जब हमसे गहनों की माँग की तो क्षण भर के लिए हमें कुछ वैसा लगा और गहना देने में तनिक हिचकिचाहट महसूस हुई पर यह सोचा कि उनकी प्रसन्नता में हमारी खुशी है, हमने गहने दे दिए । केवल टीका, नथुनी, बिछिया रख लिए थे । वे हमारे सुहागवाले गहने थे । उस दिन तो उन्होंने कुछ नहीं कहा, पर दूसरे दिन वे अपनी पीड़ा न रोक सके । कहने लगे- "तुम जब मिरजापुर जाओगी और लोग गहनों के संबंध में पूछेंगे तो क्या कहोगी ?"

हम मुसकराई और कहा- "उसके लिए आप चिंता न करें । हमने बहाना सोच लिया है । हम कह देंगी कि गांधीजी के कहने के अनुसार हमने गहने पहनने छोड़ दिए हैं । इसपर कोई भी शंका नहीं करेगा ।" तुम्हारे बाबू जी तनिक देर चुप रहे, फिर बोले- "तुम्हें यहाँ बहुत तकलीफ है, इसे मैं अच्छी तरह समझता हूँ । तुम्हारा विवाह बहुत अच्छे, सुखी परिवार में हो सकता था, लेकिन अब जैसा है वैसा है । तुम्हें आराम देना तो दूर रहा, तुम्हारे बदन के भी सारे गहने उतरवा लिए ।"

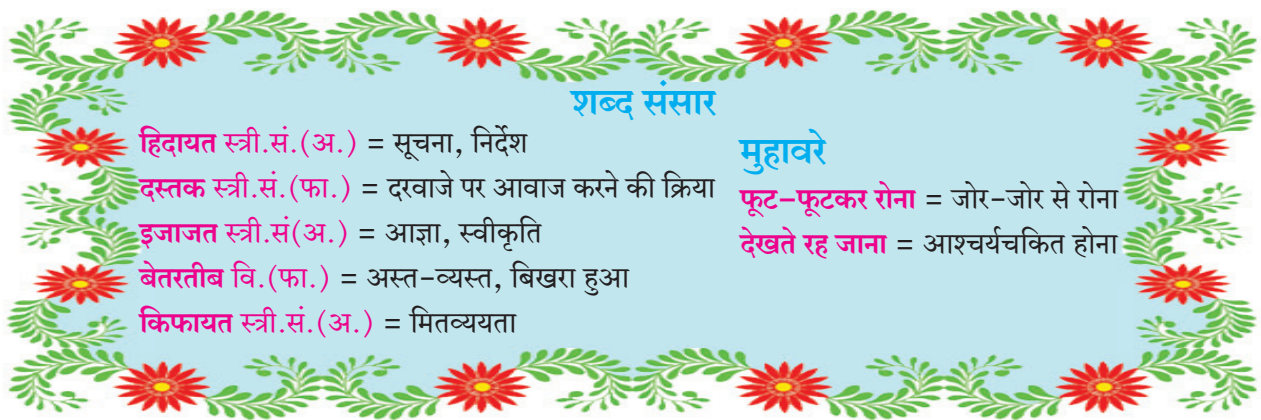
हम बोलीं- "पर जो असल गहना है वह तो है । हमें बस वही चाहिए । आप उन गहनों की चिंता न करें । समय आ जाने पर फिर बन जाएँगे । सदा ऐसे ही दिन थोड़े रहेंगे । दुख-सुख तो सदा ही लगा रहता है ।"

('लाल बहादुर शास्त्री : मेरे बाबूजी' से)

— ० —



अनुशासन जीवन का एक अंग है, इसके विभिन्न रूप आपको कहाँ-कहाँ देखने को मिलते हैं, बताइए ।



शब्द संसार

हिदायत स्त्री.सं.(अ.) = सूचना, निर्देश

दस्तक स्त्री.सं.(फा.) = दरवाजे पर आवाज करने की क्रिया

इजाजत स्त्री.सं.(अ.) = आज्ञा, स्वीकृति

बेतरतीब वि.(फा.) = अस्त-व्यस्त, बिखरा हुआ

किफायत स्त्री.सं.(अ.) = मितव्ययता

मुहावरे

फूट-फूटकर रोना = जोर-जोर से रोना

देखते रह जाना = आश्चर्यचकित होना

स्वाध्याय

* सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए :-

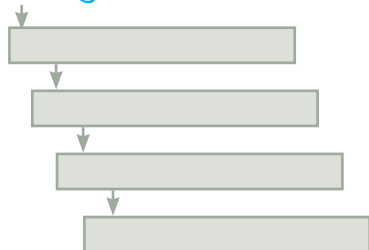
(१) संजाल पूर्ण कीजिए :



(२) परिणाम लिखिए :

- सुबह साढ़े पाँच-पौने छह बजे दरवाजा खटखटाने का -
- साठ पैसे प्रति किलोमीटर के हिसाब से पैसे जमा करवाने का -

(३) पाठ में प्रयुक्त गहनों के नाम :



(४) वर्ण पहेली से विलोम शब्दों की जोड़ियाँ ढूँढ़कर लिखिए :

दु	अ	ग	प	----- × -----
सु	बु	स	रा	----- × -----
रु	ख	×	ला	----- × -----
प्र	भ	यो	न्न	----- × -----

(५) 'पर जो असल गहना है वह तो है' इस वाक्य से अभिप्रेत भाव लिखिए ।

(६) कुरते के प्रसंग से शास्त्री जी के इन गुणों (स्वभाव) का पता चलता है : १. _____ २. _____

(७) पाठ में प्रयुक्त परिमाणों की सूची तैयार कीजिए : १. _____ २. _____

(८) 'पर' शब्द के दो अर्थ लिखकर उनका स्वतंत्र वाक्य में प्रयोग कीजिए । १. _____ २. _____



अभिव्यक्ति

'सादा जीवन, उच्च विचार' विषय पर अपने विचार लिखिए ।

(१) निम्नलिखित वाक्यों को व्याकरण नियमों के अनुसार शुद्ध करके फिर से लिखिए :
[प्रत्येक वाक्य में कम-से-कम दो अशुद्धियाँ हैं]

१. करामत अली गाय अपनी घर लाई ।
२. उसने गाय की पीठ पर डंडे बरसाने नहीं चाहिए थी ।
३. करामत अली ने रमजानी पर गाय के देखभाल का जिम्मेदारी सौंपी ।
४. आचार्य अपनी शिष्यों को मिलना चाहते थे ।
५. घर में तख्ते के रखे जाने का आवाज आता है ।
६. लड़के के तरफ मुखातिब होकर रामस्वरूप ने कोई कहना चाहा ।
७. सिरचन को कोई लड़का-बाला नहीं थे ।
८. लक्ष्मी की एक झूबेदार पूँछ था ।
९. कन्हैयालाल मिश्र जी बिड़ला के पुस्तक को पढ़ने लगे ।
१०. डॉ. महादेव साहा ने बाजार से नए पुस्तक को खरीदा ।
११. लेखक गोवा को गए उनकी साथ सादू साहब भी थे ।
१२. टिळक जी ने एक सज्जन के साथ की हुई व्यवहार बराबर थी ।
१३. रंगीन फूल की माला बहोत सुंदर लग रही थी ।
१४. बूढ़े लोग लड़के और कुछ स्त्रियाँ कुएँ पर पानी भर रहे थे ।
१५. लड़का, पिता जी और माँ बाजार को गई ।
१६. बरसों बाद पंडित जी को मित्र का दर्शन हुआ ।
१७. गोवा के बीच पर घूमने में बड़ी मजा आई ।
१८. सामने शेर देखकर यात्री का प्राण मानो मुरझा गया ।
१९. करामत अली के आँखों में आँसू उतर आई ।
२०. मैं मेरे देश को प्रेम करता हूँ ।



उपयोजित लेखन

निम्नलिखित मुद्दों के आधार पर कहानी लिखिए । उसे उचित शीर्षक दीजिए ।

गाँव में लड़कियाँ — सभी पढ़ने में होशियार — गाँव में पानी का अभाव — लड़कियों का घर के कामों में सहायता करना — बहुत दूर से पानी लाना — पढ़ाई के लिए कम समय मिलना — लड़कियों का समस्या पर चर्चा करना — समस्या सुलझाने का उपाय खोजना — गाँववालों की सहायता से प्रयोग करना — सफलता पाना — शीर्षक ।

